गर्भवती माता से शिशु को एच0आई0वी0 संक्रमण
लेखकः एल्यनॉर टर्नबुल

एच0 आई0 वी0 एक प्रकार का वायरस है जो रक्त और अन्य शारीरिक द्रव्यो जैसे माता के दूध मे पाया जाता है. यह वायरस खून मे पाई जाने वाली सी0डी0 4 कोशिकाओ (जो कि हमारी रोग प्रतिरोधी प्रणाली का हिस्सा है) को संक्रमित करता है. सी0डी0 4 कोशिकाए एच0आई0वी0 की उपस्थिति से कमज़ोर हो जाती है और नई कोशिकाओ की उत्पत्ति नही कर पाती है. यह शरीर की रोग प्रतिरोधी प्रणाली को सुचारू रूप से कार्य नही करने देता है और परिणाम-स्वरूप एच0आई0वी0 संक्रमित व्यक्ति आसानी से रोग और संक्रमण का शिकार हो जाते है और अंततः एड्स से पीड़ित हो जाते है. बच्चो मे एच0आई0वी0 संक्रमण का प्रमुख और सर्वाधिक ज्ञात कारण जन्म के समय माता से शिशु को संक्रमण (एम0टी0सी0टी0) होना पाया गया है. वायरस से बचाव की दवाओ के बिना 25 प्रतिशत एच0आई0वी0 संक्रमित गर्भवती महिलाये अपने शिशुओ को इस वायरस से संक्रमित कर देंगी. [1]

एच0आई0वी0 संक्रमण की सम्भावनाये

माता से शिशु को संक्रमण गर्भ मे, जन्म मे अथवा स्तनपान से हो सकता है; एच0आई0वि0 संक्रमित महिलाओ के 15-35 प्रतिशत शिशु जन्म के समय संक्रमित हो जाते है. यदि माता का एच0आई0वी0 संक्रमण अंतिम अवस्था मे है अथवा उसे एड्स है; यदि उसके रक्त मे वायरस की मात्रा अधिक है या सी0डी0 कोशिकाये कम है; यदि प्रसव पीड़ा अधिक है या माता को सेक्स सम्बंधी संक्रमण है (उदाहरण के लिये सेक्स संक्रामक रोग जैसे क्लैमीडिया); या वह गर्भ के समय मे मादक ड्रग्स का प्रयोग करती हो या फिर वह गर्भ के समय ही एच0आई0वी0 से संक्रमित हुई हो, तो शिशु के संक्रमित होने की सम्भावना बढ जाती है.

केन्या (16^{2} प्रतिशत) और ज़ाम्बिया (24^{3} प्रतिशत) जैसे देशो मे जहां गर्भवती महिलाओ मे एच0आई0वी0 संक्रमण की दशा गम्भीर है, यदि माता से शिशु को संक्रमण रोकने के लिये एच0आई0वी0 संक्रमण विरोधी कीमोथेरेपी[4] उपलब्ध न हुई तो लगभग हर 10 मे से 1 शिशु एच0आई0वी0 के साथ जन्म लेगा. बच्चो मे संक्रमण की घटना जोकि वैश्विक संक्रमण का 10 प्रतिशत है, शिशु के स्तनपान से बढ जाती है; नायरोबी के एक शोध से पता चला है कि एच0आई0वी0 संक्रमित महिलाओ के 40 प्रतिशत शिशुओ को अपने जन्म के बाद कुछ महीनो मे स्तनपान से संक्रमण

---

[1] कॉनर ई.एम., स्पर्लिंग आर.एस., गेल्बर आर, लेख: ज़िडोवुडीन से माता शिशु मे एच0आई0वी0 संक्रमण मे कमी, न्यू इन्गलैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन 1194; 331:1173-1180

[2] डी कॉक, के. एम. फौलर, एम. जी., मर्सियर ई., डि विंसेंज़ी ई, सबा जे., हॉफ ई., लेख: सिमित संसाधन देशो मे माता से शिशु को एच0आई0वी0 संक्रमण से बचाव: शोध का योजना मे प्रयोग. जामा 2000, 283: 1175-1182

[3] अफ्रीका मे माता से शिशु को एच0आई0वी0 संक्रमण से बचाव: ज़ाम्बिया लुसाका मे नेवीरपीन आधारित कार्यक्रम मे सफलता और कठिनाईया. एड्स. 17(9):1377-1382, जून 13, 2003. स्ट्रिंजर, एलिज़बेथ एम. ए-सी; सिंकाला, मोसेस ए-डी; स्ट्रिंजर जेफ्री एस. ए. ए-सी; ज़ैसे, एलिज़बेथ सी; माकूका , इडा सी; गोल्डेनबर्ग, रॉबर्ट एल ए,सी, क्वापे, पास्कल इ; चिलुफ्या, मार्था इ; वर्मंड, स्तेन एच. ए-सी

[4] फिल्केस्नेस के, मुसोंडा आर, कासुम्बा के, मुबानगा, मुसोंडा आर, सिकोन एम. ज़ाम्बिया की एच0आई0वी0 महामारी: गर्भवती महिलाओ मे सामाजिक प्रवृत्ति के सूचक. एड्स 1997,11: 339-345.

हुआ. राष्ट्रीय एम0टी0सी0टी0 बचाव कार्यक्रम अब पूरे अफ्रीका मे चल रहे है और आशा की जा सकती है कि इस सुविधा के मिलने से एच0आई0वी0 संक्रमित बच्चो की संख्या घटेगी.

बचाव के उपाय

एम0टी0सी0टी0 रोकने के सफल कार्यक्रम बहुत जटिल होते है, जिनमे दवाओ का उपयोग केवल एक उपाय है, जिसका उपयोग केवल अंतिम विकल्प के रुप मे किया जाना चाहिये. मुख्य बचाव उपाय के लिये युवतियो और महिलाओ के सम्बोधित कर उन्हे एच0आई0वी0 संक्रमण से बचाना चाहिये, अनचाहे गर्भ से बचने मे उनकी सहायता करनी चाहिये, कंडोम के प्रयोग की सलाह देनी चाहिये और स्कूलो मे अपरिचित लोगो से खतरो के बारे मे समझाना, आदि बहुत ही सफल रहे है. गरीब इलाको की युवतिया, अक्सर अपने जीवनयापन (श्रृंगार अथवा कपड़े) का स्तर सुधारने के लिये अपने से बहुत अधिक आयु के पुरुषो से सेक्स सम्बंध बनाती है; इन पुरुषो के अनेक साथियो से सेक्स सम्बंध होने के कारण एच0आई0वी0 संक्रमण का खतरा बढ जाता है.

एक अन्य बचाव उपाय जिसके विषय मे कार्य की आवश्यक्ता है, वो है गर्भवती महिलाओ मे स्वयं के एच0आई0वी0 स्थिति के ज्ञान का अभाव. अविकसित देशो मे कई दशको तक जांच के सही रूप से न किये जाने के कारण अधिकतर एच0आई0वी0 संक्रमित लोग (90 प्रतिशत से अधिक) यह भी नही जानते कि वे संक्रमित है[5]. महिलाये एच0आई0वी0 परीक्षण के लिये स्वास्थ्य केंद्र जाने से संकोच करती है, विशेषकर जिस रूढिवादि समाज मे हम रहते है, वहां महिलाये डरती है कि एच0आई0वी0 परीक्षण का परिणाम उनके पति या परिवार को पता चल जायेगा. कई समुदायो मे एच0आई0वी0 संक्रमण और एच0आई0वी0 संक्रमित महिलाओ का विरोध आम बात है; यदि परीक्षण मे वह संक्रमित पायी गयी तो महिलाओ को हिंसा, त्याग दिये जाने[6] अपने बच्चो से बिछड़ जाने का डर होता है. इसपर, यह भी पाया गया है कि परिवार का जो भी सदस्य, विशेषकर अगर महिला हो, वो परीक्षण मे संक्रमित पाया जाये तो उसे ही पूरे परिवार मे एच0आई0वी0 संक्रमण फैलाने का दोषी घोषित कर दिया जाता है, फिर उन्हे अपने परिवार मे अपमान सहना पड़ता है और उनका परिवार उन्हे त्याग दिया जाता है. इस अपमान और विरोध का सामना समुदाय के लोगो को ही करना होगा जिससे एच0आई0वी0 संक्रमित लोगो को सहायता मिल सके; स्वास्थ्य केंद्रो को रोगियो की जानकारी को गोपनीय रखना, सीखना होगा, जिससे महिलाये नि:संकोच होकर परीक्षण करवा सके और जब आवश्यक्ता हो तो उनहे नेवीरपीन (दवा) के साथ सलाह और सहायता दे सके जैसा कि आगे बताया गया है.

सुरक्षात्मक एम0टी0सी0टी0 एच0आई0वी0 कीमोथेरेपी

प्रोफिलाक्सिस एंटी-रेट्रो उपचार प्रणाली, माता से शिशु को एच0आई0वी0 संक्रमण रोकने का उपाय है. इस उपचार प्रणाली मे कुछ समय तक ज़ीडोविडीन और नेवीरपीन जैसे ए0आर0वी0 दवाओ को गर्भ

---

[5] यू.एन.एड्स/ विश्व स्वास्थ्य संगठन योजना (2004): www.who.int/bulletin/volumes/84/1/52.pdf

[6] माता से शिशु को एच0आई0वी0 संक्रमण बचाव को स्वास्थ्य सेवा मे सम्मिलित करना: दक्षिण अफ्रिका के अनुभवो से शिक्षा लेना. एम-एटिएबेट ए1, डी. फ्रांस्मन ए2, बी फॉर्सिथ ए3, एन कोएटज़ी ए4, जी हसी अ2

के अंत समय मे, जन्म के समय और फिर नवजात शिशु को दिया जाता है, साथ ही अधिक मात्रा मे वायरस संक्रमित महिलाओ को कृतिम जन्म की सहायता से, जन्म के समय एच0आई0वी0 संक्रमण की दर 2 प्रतिशत अथवा इससे भी कम की जा सकती है. [7]एक प्रणाली जो विशेष रूप से सफल सिद्ध हुई है, वो है ए0आर0वी0 प्रोफिलैक्सिस जो कि गर्भ के 28वे सप्ताह से दी जाती है, ज़ीडोवुडीन प्रतिदिन दो बार और नेवीरपीन प्रतिदिन एक बार माता और शिशु को जनम के समय दी जाती है. यह प्रणाली महिलाओ और स्वास्थ्य कार्यक्रमो पर अनावश्यक दबाव डालती है, और यदि यह प्रणाली सम्भव न हो तो अन्य प्रणालियां भी कारगर हो सकती है; जैसे यदि माता प्रसव पीड़ा शुरु होते समय एक गोली नेवीरपीन ले लेती है (ऐसे आवश्यक नही है कि वह किसी अस्पताल मे हो, वह घर पर भी गोली ले सकती है) और फिर यदि नवजात शिशु को एक गोली नेवीरपिन (जन्म के प्रथम 72 घंटे मे) दे दी जाये, तो शिशु के माता से एच0आई0वी0 संक्रमण की सम्भावना आधी होकर 10 प्रतिशत से भी कम हो जाती है. यह एम0टी0सी0टी0 सुरक्षा उपाय कम संसाधनो मे भी कारगर एवं उपयोगी सिद्ध हो चुका है, जैसे लुसाका मे जहां हज़ारो महिलाओ ने स्वैच्छिक परीक्षण के बाद सहायता और नेवीरपीन थेरेपी[8] प्राप्त की है. नेवीरपीन एक ऐसी दवा है जो एच0आई0वी0 कोशिकाओ की पुनर्सृजन को बाधित करती है और माता के शरीर मे एच0आई0वी0 की मात्रा कम करके नवजात शिशु मे जाने की सम्भावना कम कर देती है[9]. जो माताए एंटी-रेट्रोवायरल थेरेपी स्वीकार करती है, उनके शिशुओ मे जन्म के विकार अथवा सामान्य विकास मे कोई बाधा नही देखी गयी है, किन्तु [10] इस रोग के नेवीरपीन से प्रतिरोधक हो जाने की सम्भावना है; इस विषय पर शोध चल रहा है.

स्तनपान द्वारा एच0आई0वी0 संक्रमण

एच 0आई0वी0 संक्रमित महिलाये प्राय: अपने शिशु के लिये सही पोषण ढूढने की समस्या से जूझती है; उन्हे अपने शिशु को एच0आई0वी संक्रमण से बचाने के साथ, सही विकास के लिये पोषण और उन रोगो से बचाव करना होता है जो स्तनपान न कराने से हो सकते है. विकासशील देशो मे 5 वर्ष से कम के बालको की 54 प्रतिशत मृत्यु कुपोषण के कारण होती है. विश्व स्वास्थ्य संगठन दिशानिर्देशो के अनुसार यदि शिशु आहार स्वीकार्य, उपलब्ध, किफायती , सुरक्षित हो तो एच0आई0वी0 महिलाओ को स्तनपान पूर्ण रूप से बचना चाहिये[11]. जब शिशु आहार की तैयारी करे तो यह आवश्यक है कि शिशु के लिये दूध साफ पानी से, किसी स्वच्छ बर्तन मे बनाना चाहिये. ऐसी स्तिथि मे जब स्तनपान के अतिरिक्त कोई सुरक्षित उपाय न हो, विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शिशु को पहले छह माह तक केवल

---

[7] सी.डी.सी. गर्भवती महिलाओ के एच0आई0वी0 परीक्षण के लिये सुझाव. एम.एम.डब्ल्यू 2001;50(संख्या आर.आर-19):59-85

[8] एड्स. 17(9):1377-1382, जून 13, 2003. स्ट्रिंजर, एलिज़बेथ एम. ए-सी; सिंकाला, मोसेस ए-डी; स्ट्रिंजर जेफ्री एस. ए. ए-सी; ज़ैसे, एलिज़बेथ सी; माकूका , इडा सी; गोल्डेनबर्ग, रॉबर्ट एल ए,सी, क्वापे, पास्कल इ; चिलुफ्या, मार्था इ; वर्मंड, स्तेन एच. ए-सी

[9] http://www.globaltreatmentaccess.org/content/tx_prep/mtct.html

[10] माता से शिशु संक्रमण के तथ्य:
http://www.aidsmap.com/publications/factsheets/fs28.htm

[11] एच0आई0वी0 अंद स्तनपान, विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2003

स्तनपान ही कराना चाहिये[12]; शिशु को केवल माता से या किसी दाई से स्तनपान कराना चाहिये. कई विशेषज्ञो के शोध दर्शाते है कि स्तनपान और शिशु आहार के मिले जुले उपयोग से एच0आई0वी0 संक्रमण की सम्भावना केवल स्तनपान की तुलना मे बढ जाती है; अत: इस मिलेजुले आहार से बचना चाहिये क्योकि इससे न केवल एच0आई0 वी0 संक्रमण की किन्तु डायरिया और अन्य संक्रामक रोगो की सम्भावना भी बढ जाती है.

निष्कर्ष

अंतत:, गर्भवती महिलाये जो कि एच0आई0वी0 से संक्रमित है, अपने शिशुओ को संक्रमण से बचाने के लिये उपलब्ध उपाय उपयोग कर सकती है; यह उपाय 100 प्रतिशत सुरक्षा तो नही देते किन्तु यह केवल उन कुछ ही महिलाओ के लिये उपलब्ध है जो कि जानती है कि वो संक्रमित है. सबसे पहले हमे उन सामाजिक समस्याओ से निपटना होगा जिनके कारण महिलाओ और युवतियो को एच0आई0वी0 संक्रमण का खतरा तो अधिक होता किन्तु परीक्षण की सेवा का लाभ नही उठा पाती है. अगर हमे परीक्षण और सलाह लेने वाले लोगो की संख्या बढानी है तो हमे संक्रामक लोगो के प्रति अपमान और विरोध के विषय मे खुले रुप से सामाजिक चर्चा करनी चाहिये.

[12] विश्व स्वास्थ्य संगठन दिशानिर्देश